बुराई के पुतले जलाते चलो प्रेम की दुनिया बसाते चलो

रावण के पुतले का दहन न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह समाज के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटना भी है जो अच्छाई की बुराई पर विजय, व्यक्तिगत विकास और सामुदायिक एकता को बढ़ावा देती है। यह पर्व यह सिखाता है कि हमें अपने जीवन में अच्छाई का पालन करना चाहिए और बुराई से दूर रहना चाहिए। दशहरा भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है जो हर साल नवरात्रि के समापन पर मनाया जाता है। इस दिन रावण के पुतले का दहन एक महत्वपूर्ण परंपरा है । अगर हम इस प्रतीक और संकेत को समझें तो रावण को एक दुष्ट और अहंकारी राजा के रूप में चित्रित किया गया है, और उसका वध आत्मज्ञान और अहंकार के विनाश का प्रतीक है। रावण दहन धार्मिक दृष्टि से बेहद महत्व रखता है। यह भगवान राम के धर्म के प्रति अडिग रहने और न्याय की स्थापना के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यह दिन श्रद्धालुओं को धर्म और कर्तव्यों के पालन की याद भी दिलाता है। दशहरा का मुख्य धार्मिक अर्थ भगवान राम द्वारा रावण का वध करना है। रावण ने माता सीता का अपहरण किया था और भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण और वानर सेना की मदद से उसे हराया। साथ ही दशहरा को देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय के साथ भी जोड़ा जाता है। इस दिन देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध किया, जो बुराई का प्रतीक था।

तेजी से बनाए जा रहे पुतले

- रावण, कुंभकरण, मेघनाद के पुतलों को आकार देने का काम कारीगर तेजी से कर रहे हैं। कई रामलीलाओं में कुंभकरण और मेघनाद के पुतलों का दहन भी हो चुका है। बाजार में पांच सौ रुपये से लेकर पांच हजार तक के पुतलों को आकार दिया गया है। कानपुर, प्रयागराज, लखनऊ, कन्नौज, इटावा, उन्नाव समेत कई शहरों में दूसरे प्रांतों से आए कारीगर सड़कों के किनारे पुतले बनाकर बेच रहे हैं तो रामलीलाओं में भी पुतलों को आकार दिया जा रहा है। बांस और कागज से बने ये पुतले जलने के साथ ही यह संदेश देते हैं कि बुराई के मार्ग पर चलने के बजाय सत्य के मार्ग पर चलें अन्यथा अंत बुरा होगा।

वैदिक विभूषण ज्योतिषाचार्य पं. मनोज कुमार द्विवेदी

रांची में कपड़े से बने रावण के पुतले का दहन

- ऐसा माना जाता है कि रावण के पुतले का दहन सबसे पहले रांची शहर में हुआ था जोकि पहले बिहार का हिस्सा था और अब झारखंड राज्य की राजधानी है। यहां 1948 में रावण के पुतले का दहन किया गया था। बंटवारे के बाद साल 1948 में पाकिस्तान से भारत आए कुछ शरणार्थी परिवारों ने रावण के पुतले का दहन करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया था। यहां पर शुरुआत में यह कार्यक्रम बहुत छोटे स्तर पर किया गया लेकिन बाद में इसे और ज्यादा भव्य रूप में किया जाने लगा। राजधानी दिल्ली के रामलीला मैदान में पुतला दहन कार्यक्रम 17 अक्टूबर 1953 को किया गया था। इस रावण के पुतले को कागज या लकड़ी के बजाय कपड़ों की मदद से तैयार किया गया था।

विजयदशमी पर क्या हैं परम्परा

विजय का सूचक है पान

- दशहरा के दिन रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के पुतलों का दहन करने के पश्चात पान का बीणा खाना सत्य की जीत की ख़ुशी को व्यक्त करता है। इस दिन हनुमानजी को बूंदी का भोग लगाने बाद उन्हें पान अर्पित करने की परंपरा है।

नीलकंठ के दर्शन

- मान्यता है कि लंकापति रावण पर विजय पाने की कामना से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने पहले नीलकंठ पक्षी के दर्शन किए थे। नीलकंठ पक्षी को भगवान शिव का प्रतिनिधि माना गया है। दशहरा के दिन नीलकंठ के दर्शन और भगवान शिव से शुभफल की कामना की जाती है।

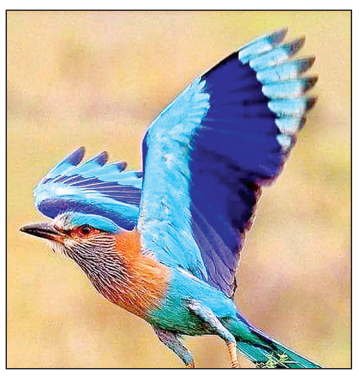

शमी वृक्ष का दर्शन और पूजन

- दशहरा के दिन शमी वृक्ष का दर्शन व पूजन करना शुभ माना जाता है, जिससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है, धन-समृद्धि की प्राप्ति होती है । शनि दोष, साढ़े साती और ढैय्या से मुक्ति मिलती है।

कानपुर और दशहरा

- कानपुर में रावण का एक ऐसा अनोखा मंदिर मौजूद है जिसके कपाट साल में एक बार खुलते हैं। विजय दशमी के दिन रावण की प्रतिमा का जलाभिषेक, शृंगार और पूजन होता है। साल 1868 में बने इस मंदिर में इस दिन भारी भीड़ होती है। विजय दशमी के दिन रावण के वध और दहन की परंपरा के बीच कानपुर में एक तरफ अलग-अलग स्थानों पर रावण दहन होता है तो शहर के इस प्रसिद्ध रावण के मंदिर में पूजा और शृंगार होता है। अंग्रेज लेखक विलियम हावर्ड रसेल ने वर्ष 1858-59 का समय भारत में बिताया था। इस दौरान उन्होंने कानपुर की भी यात्रा की। भारत में अपनी यात्रा के वृतांत पर उन्होंने डायरी तैयार की। वर्ष 1860 में इसको माई डायरी इन इंडिया के नाम से लंदन में रूटलेज, वार्ने एंड रूटलेज ने प्रकाशित किया। इस पुस्तक में लेखक ने कानपुर की रामलीला व रावण के पुतला दहन का भी वर्णन किया है। उस समय होने वाली भीड़, विशालकाय रावण व भव्य सजावट, संगीत आदि का जिक्र है।

ताम्रपत्र पर उकेरते तस्वीर, अब पद्मश्री के लिए प्रस्तावित किया नाम

हाथों से ताम्रपत्र पर तस्वीर उकेरने वाले कानपुर के शिवाला निवासी रणजीत सिंह का नाम जिलाधिकारी ने पद्मश्री सम्मान के लिए भेजा है। रणजीत सिंह अकेले शख्स हैं जो ताम्रपत्र पर हाथों से तस्वीर उकेरते हैं। हस्तशिल्पकारी उनको विरासत में मिली है। तांबा और जस्ता पर तस्वीर उकेरने का कार्य करने के शौकीन रणजीत सिंह के परिवार में पीढ़ियों से यह कार्य हो रहा है। उन्हें उम्मीद है कि पद्श्री सम्मान उन्हें जरूर मिलेगा। जब पता चला कि प्रशासन ने उनका नाम इस अवार्ड के लिए भेजा है तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। समाचार मिलते ही आंखें नम हो गई। उनका सपना है कि ताम्रपत्र की कला जिंदा रहे। इसके लिए वे निरंतर प्रयास भी कर रहे हैं। इसीलिए वह 82 साल की उम्र में भी युवाओं को हाथों से बनाई जाने वाली इस कला को सिखाते हैं।

कई ऐतिहासिक इमारतों की तस्वीर भी बनाई

रणजीत सिंह बचपन में परिवार में आभूषण बनाने का कार्य देखते थे तो उन्हें भी तांबा, जस्ता पर तस्वीर बनाने की जिज्ञासा हुई। इस सपने को साकार करने में वे जुट गए और हाथों से तांबा और जस्ता पर तस्वीर उकेरने का काम सीखने में जुट गए। धीरे- धीरे वह इस कला में पारंगत हो गए। रणजीत सिंह को हिंदी के साथ पंजाबी, राजस्थानी व अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान है। शौक में ही अपनी कला को जीवित रखने के लिए वह तांबे और जस्ता पर अपने हाथों से कई ऐतिहासिक तस्वीरें वे उकेर चुके हैं। रणजीत सिंह ने ताम्रपत्र पर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम , लखनऊ स्थित रूमी दरवाजा, उत्तर प्रदेश विधानसभा भवन, संसद भवन, आगरा के ताजमहल, कानपुर की ऐतिहासिक लाल इमली, बिठूर के ऐतिहासिक घाटों की तस्वीर भी बना चुके हैं। ग्रीन पार्क स्टेडियम में बनाई गई विजिटर गैलरी में लगी 24 क्रिकेटरों की तस्वीर, राष्ट्रपति महात्मा गांधी की दांडी यात्रा से जुड़ी तस्वीर भी ताम्रपत्र पर उकेर चुके हैं।

पूर्व प्रधानमंत्रियों को भेंट कर चुके तस्वीर

वे तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई, मनमोहन सिंह और एचडी देवगौड़ा की तस्वीर बनाने के साथ ही उन्हें भेंट भी कर चुके हैं। तत्कालीन रामनाथ कोविंद व प्रतिभा पाटिल को भी उनकी तस्वीरें भेंट कर चुके हैं। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर समेत कई खिलाड़ियों की तस्वीरें बनाई और उनसे मिलकर उन्हें दिया भी। इस कार्य के लिए उन्हें कई बड़े पुरस्कार भी मिल चुके हैं। वे चाहते हैं कि उनके द्वारा ताम्रपत्र पर बनाई गई श्रीराम मंदिर की तस्वीर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को खुद ही भेंट करें। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को वे कानपुर में आयोजित एक सभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर भेंट कर चुके हैं। वह मांग के अनुसार विभिन्न खेलों में विजेता के लिए मेडल भी बनाते हैं। मर्चेंट्स चैंबर, जीएसवीएम मेडिकल कालेज के स्वर्ण जयंती पर भी उन्होंने मेडल तैयार किए। आइआइटी कानपुर के दीक्षांत समारोह के लिए भी मेडल बना चुके हैं।

संत मिश्रा
व्यापारी नेता

आसान नहीं होता चित्र बनाना

- रणजीत सिंह का कहना है कि यह कार्य बहुत आसान नहीं है। चित्र तैयार करने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। मेहनत के साथ दिमाग भी लगाना पड़ता है। केमिकल की एक भी बूंद कम अथवा ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अगर इसका संतुलन बिगडा तो पूरा ताम्रपत्र खराब हो जाएगा। एक तस्वीर बनाने में सात से आठ दिन का वक्त लगता है और 15000 हजार रुपये खर्च होता है। आगरा में रानी एलिजाबेथ उनके पिता स्व .बालकृष्ण ने उन्हें 3 इंच लंबा, 2 .5 इंच चौड़ा शीशा दिया था। इस पर मीना कारीगरी की गई थी।. शीशे के चारों ओर किनारे खुदाई करके उसमें हीरे लगाए गए थे।

ये सम्मान मिले

- पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सम्मानित किया।
- उप्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से तत्कालीन राज्यपाल मोतीलाल वोरा ने उन्हें सम्मानित किया।
- अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 1989 धरशास्त्री ने सम्मान दिया।
- हिन्दी सेवा निधि के कार्यक्रम में सम्मानित किए जा चुके हैं।
- 2003 में यूपी कॉन रजत जयन्ती वर्ष पर उन्हें सेवा सम्मान दिया गया था।
- पूर्व विधानसभा अध्यक्ष केसरीनाथ त्रिपाठी ने उन्हें 2005 राष्ट्रीय भाषा हिन्दी सेवा सम्मान दिया।

जैन धर्मावलंबियों का प्रमुख तीर्थस्थल सोनागिरि

जैन धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक सोनागिरि सौ से अधिक भव्य जैन मंदिरों से सुशोभित है। यहां पर्यटक आध्यात्मिक शांति के साथ-साथ अद्भुत स्थापत्य कला और शांत वातावरण का अनुभव कर सकते हैं। मध्य प्रदेश के दतिया जिले में स्थित यह स्थल स्वर्ण पर्वत या गोल्डन पीक के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान उन जैन धर्मावलंबियों के लिए के लिए एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है जो शांतिपूर्ण वातावरण में आत्म-अनुशासन और मोक्ष प्राप्त करने की यात्रा करना चाहते हैं। यह हर दिन बड़े पैमाने पर श्रद्धालु आते हैं और दर्शन- पूजन करते हैं। जैन धर्म ही नहीं बल्कि हिंदू, सिख धर्म के लोग भी यहां भ्रमण करने के लिए आते हैं। सोनागिरि भौगोलिक रूप से बहुत बड़ा गांव नहीं है, पर जैन धर्म के पवित्र तीर्थस्थल की वजह से यह भारत ही नहीं पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। पहाड़ी पर बने मंदिरों का विशाल समूह न सिर्फ आध्यात्मिक, बल्कि पर्यटन के नजरिए से भी लोगों के लिए काफी अहम है। जैन धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में सोनागिरी मंदिर का नाम आता है।

चंद्रप्रभु प्रभु 17 बार यहां आए

सोनागिरी की मनोहारी पहाड़ी का प्राचीन नाम श्रवणगिरि या स्वर्णगिरि बताया जाता है। सोनागिरी पहाड़ी पर बने मंदिरों का निर्माणकाल नौवीं और दसवीं सदी का है। जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्र प्रभु यहां 17 बार आए थे। जैन अनुयायियों के अनुसार राजा नग और अनंग कुमार इसी पहाड़ी पर जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हुए थे। उन्होंने यहां मोक्ष की प्राप्ति होने की वजह से ही जैन धर्म के संत और अनुयायी मोक्ष और निर्वाण की तलाश में यहां आते हैं। यहां पहाड़ी पर 43 फीट ऊंचा एक महास्तम्भ स्थापित है। यहां नंदीश्वर द्वीप जिनायल भी है। इसका निर्माण आचार्य ज्ञानसागर महाराज की प्रेरणा से किया गया था।

132 एकड़ में बने हैं मंदिर

- सोनागिरी की प्राकृतिक छटा अद्भुत इसलिए दिखती है क्योंकि यहां जैन धर्म के भव्य मंदिरों की श्रृंखला है। यहां के मनोरम दृश्यों को देखने के बाद पर्यटक यहां घंटों नहीं बल्कि कई दिन तक रुकना चाहते हैं और यहां की वादियों को निहारना चाहते हैं। सुंदर मंदिरों का नजारा हर किसी का मन मोह लेता है। यहां स्थापित मंदिर 132 एकड़ क्षेत्रफल में फैले हुए हैं। यहां 57 नंबर वाले मंदिर को को ही मुख्य मंदिर माना जाता है। कहते हैं कि आचार्य शुभ चंद्र और भर्तृहरि ने यहां कठिन तपस्या की थी। इस मंदिर में आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्र प्रभु की मूलनायक प्रतिमा है। यह प्रतिमा 17 फीट ऊंची है। गर्भ गृह की छत पर शीशे की बेहतरीन नक्काशी की गई है। यह नक्काशी जब लोग देखते हैं तो अपलक निहारते रह जाते हैं। सभा कक्ष में तीर्थंकरों के नाम दीवार पर अंकित हैं।

होली पर होता मेले का आयोजन

- इस पवित्र तीर्थ स्थल पर पांच दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। इस दौरान कई रथ यात्रायें निकाली जाती हैं। मंदिरों को सजाया जाता है। मेले में बड़ी संख्या में जैन धर्म के अनुयायी आते हैं। इस मंदिर के गर्भगृह में दो लेख देवनागरी लिपि में अंकित हैं। एक शिलालेख पर 1233 विक्रमी संवत अंकित है। सोनागिरी पहाड़ी की तलहटी में स्थित गांव भी मंदिर बने हुए हैं। मंदिरों के आसपास भी कई सुंदर कलाकृतियां हैं, जो आपका मन मोह लेंगी। पहाड़ी पर बने सभी मंदिर बहुत ही मनोरम हैं।

संजीव जैन
उद्यमी हैं एवं विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।